अर्हम्

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 20.12.2016

द्वितीय वर्ष : प्रथम प्रश्नपत्र | पूर्णांक – 100

जैन तत्त्वप्रवेश (प्रथम खंड) – 30

प्र.1 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें – 15

(क) दृष्टांत द्वार – बंध से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ख) विस्तार द्वार को प्रारंभ करते हुए तीन वर्गों तक लिखें।

(ग) क्षायोपशमिक भाव की परिभाषा करते हुए क्षयोपशम से होने वाली अवस्थाओं का वर्णन करें।

(घ) दृष्टांत द्वार के आश्रव, संवर को व्याख्यायित करें।

(ङ) कर्म के उदाहरण – वेदनीय, मोहनीय व आयुष्य कर्मों को उदाहरण के द्वारा समझाऐं।

प्र.2 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें – 15

(क) हेय–ज्ञेय–उपादेय द्वार।

(ख) रूपी अरूपी द्वार।

(ग) परमात्म द्वार।

(घ) आयुष्य कर्मबंध के कारण।

(ड.) विस्तार द्वार – आश्रव व संवर के भेद व्याख्या सहित लिखें।

(च) पारिणामिक भाव को परिभाषित करते हुए जीवाश्रित व अजीवाश्रित पारिणामिक के भेदों का वर्णन करें।

(छ) कर्म की परिभाषा लिखते हुए दर्शनावरणीय, अंतराय व आयुष्य कर्म के भेदों का उल्लेख करें।

प्रतिक्रमण – 20

प्र.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए – 10

(क) कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा या प्रायश्चित् सूत्र लिखें।

(ख) सूत्र सहित सत्य अणुव्रत या सूत्र सहित अपरिग्रह अणुव्रत लिखें।

प्र.4 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) आलोचना सूत्र (ख) अभ्युत्थान सूत्र (ग) क्षमा याचना सूत्र – सूत्र सहित लिखें।

(घ) छट्ठा प्रत्याख्यान आवश्यक लिखें। (ड) अनर्थदण्ड के अतिचार

(च) देशावकाशिक के अतिचार।

कर्म–प्रकृति – 25

प्र.5 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें – 15

(क) कर्म की मुख्य दस अवस्थाओं में से प्रकृतिबंध व स्थितिबंध की व्याख्या करें।

(ख) ज्ञानावरणीय कर्म भोगने के हेतु का पूर्ण विवरण व्याख्या सहित करें।

(ग) चारित्र मोहकर्म के लक्षण एवं कार्य का यंत्र बनाऐं।

(घ) वेदनीय कर्म की उत्तर प्रकृतियां व कर्मबंध के हेतु का वर्णन करें।

(ङ) स्थावर दशक की प्रकृतियों का पूर्ण वर्णन करें।

प्र.6 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 10

(क) ज्ञानावरणीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

(ख) वेदनीय कर्म की स्थिति लिखें।
(ग) त्रस दशक की अंतिम चार प्रकृतियों की व्याख्या करें।
(घ) गोत्र कर्म की परिभाषा करते हुए उसके कर्मबंध के हेतु लिखें।
(ङ) दर्शनावरणीय कर्मबंध के हेतुओं की व्याख्या करें।
(च) विहायोगति नाम का वर्णन करें।

गीतिका – 10 (कर्मों की संज्झाय)

प्र.7 कोई दो पद्य अर्थ सहित लिखें – 8
(क) ''सहस्त्र किरण.....घटातो रे'' (ख)''आभा नगरी.....फन्द रे''
(ग) ''सम्यक्त्वधारी.....किसका रे'' (घ) ''ब्रह्मदत्त नाम.....बांधो रे''

प्र.8 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें – (एक शब्द या एक लाईन) 2
(क) शिव पार्वती क्या पुरुष कहलाते हैं तथा इनका महल कहाँ है? व ये भोजन कैसे प्राप्त करते हैं?
(ख) आठवां चक्रवर्त्ती कौन था? तथा कितने देव खड़े देखते रहे पर उसे नहीं बचा पाए।
(ग) कृष्ण कितने यादवों के राजा था, तथा वे किस प्रकार मृत्यु को प्राप्त हुए।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान – 15

प्र.9 आठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (प्रत्येक में से दो–दो प्रश्न) 12
पच्चीस बोल – (क) पन्द्रहवां (ख) पांचवां बोल (ग) काय योग के भेद
पच्चीस बोल की चर्चा – (क) नौ उपयोग किसमें? (ख) ग्यारह गुणस्थान किसमें?
(ग) जीव के नौ भेद किसमें?
पच्चीस बोल चतुर्भंगी – (क) आत्मा किस कर्म का उदय है?
(ख) लेश्या किस कर्म का उदय?
(ग) तुम्हारे में उपयोग कितने?
तत्त्वचर्चा – (क) पाप छह में कौन? नौ में कौन?
(ख) कर्मों को बांधने वाला छह में कौन? नौ में कौन?
(ग) पांच समिति छह में कौन? नौ में कौन?

प्र10 कोई एक पद्य लिखें। 3
(क) सगला में तूं.....लगाई रे।
(ख) देव गुरु मिश्र.....रो भर्म।।